IJAER/September-October 2024/Volume-13/Issue-4 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

"रामायण के मूल्य और जानकी जीवन महाकाव्य का तुलनात्मक अध्ययन"

संदीप कुमार

शोधार्थी, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय

अस्थल बोहर, रोहतक

डॉ. पटेल सिंह

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत भाषा विभाग

अस्थल बोहर, रोहतक

सार

हिंदू साहित्य के सबसे प्रतिष्ठित महाकाव्यों में से एक रामायण और सीता के जीवन की प्रसिद्ध पुनर्कथन जानकी जीवन महाकाव्य दोनों ही गहन नैतिक, नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को दर्शाते हैं, जिन्होंने सदियों से भारतीय समाज को आकार दिया है। यह तुलनात्मक अध्ययन इन दो साहित्यिक कृतियों में निहित विषयगत, दार्शनिक और सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों की जांच करता है, और मानव चरित्र और सामाजिक आदर्शों पर उनके प्रभाव पर प्रकाश डालता है। जहां महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण भगवान राम की यात्रा, धर्म और भक्ति का एक व्यापक आख्यान प्रदान करती है, वहीं मैथिली शरण गुप्त द्वारा रचित जानकी जीवन महाकाव्य सीता के गुणों, लचीलेपन और बलिदान पर जोर देते हुए अधिक सूक्ष्म परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है। अध्ययन कर्तव्य, धार्मिकता, न्याय और भक्ति जैसे प्रमुख मूल्यों पर ध्यान केंद्रित करता है, और तुलना करता है कि दोनों ग्रंथों में इन्हें अलग-अलग तरीके से कैसे चित्रित किया गया इन साहित्यिक कृतियों का विश्लेषण करके, इस शोध का उद्देश्य सद्गुण और नैतिक आचरण के चित्रण में दार्शनिक निरंतरता और विचलन को उजागर करना है, जो समकालीन नैतिक प्रवचन में उनकी प्रासंगिकता को प्रदर्शित करता है। निष्कर्ष इस बात की गहरी समझ में योगदान करते हैं कि प्राचीन साहित्य आधुनिक समय में नैतिक और सामाजिक व्यवहार का मार्गदर्शन कैसे करता है।

मुख्य शब्द: *रामायण, जानकी जीवन महाकाव्य, धर्म, नीतिशास्त्र, सीता, राम, भारतीय साहित्य, सांस्कृतिक मूल्य*

परिचय

भारतीय साहित्य महाकाव्यों और काव्य रचनाओं में गहराई से निहित है जो समाज के नैतिक, नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को प्रतिबिंबित करते हैं। इनमें से, महर्षि वाल्मीकि द्वारा रामायण हिंदू दर्शन में सबसे प्रभावशाली ग्रंथों में से एक के रूप में एक केंद्रीय स्थान रखता है, जो भगवान राम के जीवन और आदर्शों का वर्णन करता है। दूसरी ओर, मैथिली शरण गुप्त द्वारा जानकी जीवन महाकाव्य सीता के दृष्टिकोण से महाकाव्य की एक अनूठी पुनर्कथन प्रदान करता है, जो उनके गुणों, संघर्षों और धार्मिकता के प्रति अटूट प्रतिबद्धता पर जोर देता है। दोनों ग्रंथ नैतिक मार्गदर्शक के रूप में काम करते हैं, कर्तव्य (धर्म), भक्ति (भक्ति), त्याग और न्याय के सिद्धांतों को आकार देते हैं। हालाँकि, जहाँ रामायण

भगवान राम की वीरता और धार्मिकता पर केंद्रित एक व्यापक कथा प्रस्तुत करती है, वहीं जानकी जीवन महाकाव्य सीता की ओर लेंस को स्थानांतरित करता है, यह तुलनात्मक अध्ययन दोनों कार्यों में निहित नैतिक और दार्शनिक मूल्यों की खोज करता है, विश्लेषण करता है कि वे समाज में आदर्श नेतृत्व, लिंग भूमिकाओं और नैतिक जिम्मेदारी पर चर्चा में कैसे योगदान करते हैं। इन ग्रंथों के बीच प्रमुख अंतर और समानताओं की जांच करके, इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि साहित्यिक दृष्टिकोण सामाजिक मानदंडों और मूल्यों को कैसे आकार देते हैं। शोध यह भी उजागर करेगा कि कैसे ये कार्य आधुनिक नैतिक चर्चाओं को प्रभावित करना जारी रखते हैं, समकालीन समाज में उनकी कालातीत प्रासंगिकता पर जोर देते हैं।

कवियों में काव्य रचने की प्रतिभा होती है । वह अपनी नवनवोन्मेषशालिनी प्रज्ञा से किसी नितान्त नीरस वस्तु में भी काव्यात्मक सौन्दर्य भर देता है। जब भगवती सीता के आदर्श जीवन पर सम्मानित अभिराज राजेन्द्र मिश्र जैसा समर्थ महाकवि कविता करने की इच्छा करेगा तो परम प्राज्जल एवं उदात्तगुणों से युक्त जानकी जीवनम् जैसा महाकाव्य सहृदयों के अनुरंजन हेतु अवश्यमेव निष्पन्न होगा ।

जानकीजीवनम् महाकाव्य का प्रारम्भ अत्यन्त विषादपूर्ण घटना के वर्णन से प्रारम्भ होता है अवर्षण से पीड़ित विदेह जनपदवासियों की प्रसन्नता के लिए राजा जनक गुरु शतानन्द के पास आते हैं, तत्पश्चात् गुरू के निर्देशानुसार इन्द्रदेव को प्रसन्न करने के लिए यज्ञायोजन स्वरूप राजा जनक ने अपने हाथों से पृथ्वी पर हल चलाना प्रारम्भ कर दिया तथा कुछ ही दूर हल लेकर बढ़े ही थे तभी अचानक भूमि के भीतर किसी मजबूत वस्तु में हल की नोक अटक गयी। राजा के द्वारा सम्पूर्ण शक्ति लगाने पर भी हल आगे नहीं बढ़ा अन्ततः राजा ने हल को जैसे ही बाहर निकाला वहाँ एक प्रकाशपुन्ज प्रकट हो गया जिसमें एक कोमल कन्या कुम्भ रूपी शैया पर विराजमान दिखायी पड़ती है ।

व्यलांकि सर्वैरपि लाङ्गलाग्रप्रहारभिन्नोदरकुम्भतल्पे ।

सुखं शयाना मदिरायताक्षी दिवौकसां श्रीरिव कापिबाला । । 1

आयोनिजा जानकी को राजा जनक महल में लेकर आते हैं । अपारवर्षा होती है। प्रजाओं में हर्षोल्लास मनाया जाता है ।

बाल्मीकि रामायण में भी जानकी के जन्म की कथा इसी प्रकार वर्णित है ।

अथ मे कृषतः क्षेत्रं लाङ्गलादुत्थिता ततः ।

क्षेत्रं शोधयता लब्धा नाम्ना सीतेति विश्रुता । ।

भूतलादुत्थिता या तु व्यवर्धत ममात्मजा । । 2

प्रस्तुत महाकाव्य में सीता के नैसर्गिक बालक्रीडाओं का सुन्दर चित्रण किया गया है जबकि बाल्मीकि रामायण में सीता के बालक्रीड़ा के प्रसंग का अभाव है। जानकीजीवनम् में सीता अपनी छोटी-छोटी बालकेलियों के प्रचुर विस्तार से निरन्तर माता - पिता एवं प्रजाजनों को आनन्दित करती है।

अमोदयत्सा पितरावनारतं स्वकेलिलेशप्रचारणैः ।

निभालयन्ति नियतिं विनोदनैः प्रजाजनन्चापि चकार सम्भृतम् । ।

प्रस्तुत महाकाव्य में कवि ने किशोरावस्था का मनोहारी चित्रण किया है। बाल्यावस्था से किशोरावस्था में प्रवेश करने पर बालक एवं बालिकाओं में शारीरिक एवं मानसिक आदि अनेक परिवर्तन दिखायी देते हैं तथा विषमलिंगियों के प्रति आकर्षण बढ़ते हैं। विदेहनन्दिनी किशोरी सीता में ये सभी लक्षण दिखायी पड़ते हैं । किशोरावस्था में पहुँचने पर विदेहनन्दिनी के दोनों अपांगो का विस्तार अप्रत्याशित रूप से कर्ण कुहरों तक सुशोभित होने लगा तथा दोनों कपोलमण्डलों पर भी पूर्ण प्रस्फुटित पाटल पुष्प निरन्तर दृष्टिगोचर होने लगा ।

अब सीता अकेले में नेत्रों को बंद करके किसी कमलनयन प्रीततम की कल्पना करने लगी । बाल्यावस्था में जो सीता बाल्यचपलता के कारण कुछ भी बोल देती थी अब उसमें लज्जा प्रवेश कर गयी है। गिरिजा मंदिर में प्रस्थान के समय श्री राम द्वारा अपने गुणों की प्रसंशा सुनकर वह कुछ उत्तर देने के लिए उत्कण्ठित होती है किन्तु लज्जा के कारण जड़ता को प्राप्त होती हुई वह न आगे बढ़ पायी और न पीछे, न दाहिने खिसक सकी न बांये, न उसने ऊपर की ओर देखी अथवा न नीचे की ओर । सीता एकदम स्थित मूर्ति बन गयी ।

न च ससार पुरो न च पृष्ठतो न खलु दक्षिणतो न च वामतः ।

उपरि नैव ददर्श न वाप्यधो ह्यचलमूर्तिरिवाजनि जानकी ।।

प्रस्तुत महाकाव्य में लोक परम्पराओं की चारू अभिव्यंजना हुई है । जैसे बाल्यावस्था में सीता के द्वारा गुड्डे-गुडियों का खेल, सखियों के साथ हिरन - हिरनी बनने का खेल, मिट्टी की चक्की का खेल एवं हर तालिका व्रत में लोकगीत, कजली गाने आदि । इसी प्रकार अन्य कई स्थलों पर लोक परम्पराओं को चित्रित किया गया है। राम एवं सीता के विवाह के अवसर पर कलश सूप तथा आंचल के छोर से दूल्हे की परछन करना ।

घटेन शूर्पेण पटांचलेन प्रदक्षिणीकृत्य वरत्नुराज्ञी । "

सीता-राम के विवाह के अवसर पर लोकगीतों का गाना, लक्ष्मण द्वारा सीता से हास-परिहास करना आदि का वर्णन लोक परम्पराओं को अभिव्यंजित करता है । यह कवि की नवीन कल्पना है जो काव्य को सरस एवं मधुर बना देता है । ऐसा वर्णन अन्य रामकथाधारित महाकाव्यों में नहीं दिखायी पड़ता है।

अभिराज राजेन्द्र मिश्र के जानकीजीवनम् महाकाव्य पर कालीदास का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। अभिज्ञानशाकुन्तल में कण्व ऋषि जिस प्रकार पुत्री को पति घर भेजने से आत्म सन्तुष्टि का अनुभव करते हैं उसी प्रकार जानकी जीवनम् महाकाव्य में राजा जनक पुत्री सीता को पति घर भेजकर आत्मक संतुष्टि का अनुभव करते हैं । यथा द्रष्टव्य- अभिज्ञानशाकुन्तल में

अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्यसंप्रेष्य परिग्रहीतुः ।

जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा । ।

जानकीजीवनम् में इसका प्रभाव द्रष्टव्य है-

धनं भवत्येव सुताऽन्यदीयं पिताऽवितामात्रमसौ नु तस्याः ।

समर्प्य जातेऽधिकृतेऽद्य त्वां विभाति निर्मक्षिकमेव मच्छम् ।।'

प्रस्तुत महाकाव्य की सबसे बड़ी विशेषता है सीता के निर्वासन का अभाव । उक्त घटना वाल्मीकि रामायण एवं अन्य रामकथाधारित महाकाव्यों और नाटकों से सर्वथा भिन्न है । बाल्मीकि रामायण में

राम सीता विषयक लोकापवाद को सुनकर दुखी हो जाते हैं। उन्हें पता है कि सीता निर्दोष है फिर भी अपनी कीर्ति की रक्षा के लिए बड़े निष्ठुरता से सीता का परित्याग करते हुए लक्ष्मण से कहते हैं- हे सुमित्रानन्दन ! बाल्मीकि आश्रम के निकट निर्जन वन में तुम सीता को छोड़कर शीघ्र लौट आओ, मेरी इस आज्ञा का पालन करो। सीता के विषय में मुझसे कोई दूसरी बात न कहना, जो मेरे इस कार्य मं बाधा डालेगा वह सदा के लिए मेरा शत्रु होगा ।

आश्रमो दिव्यसंकाशस्तमसातीरमाश्रितः ।

तत्रैतां विजने देशे विसृज्य रघुनन्दन ।।

शीघ्रमागच्छ सौमित्रे कुरुष्व वचनं मम ।

न चास्मि प्रतिवक्तब्यः सीतां प्रति कथंचन ।।

अहितानाम ते नित्यं मदभीष्टविचातिनात् ।

भवभूति के उत्तररामचरितम् में भी राम सीता विषयक लोकापवाद को सुनकर सीता निर्वासन का आदेश देते हैं। यहाँ वे रामायण के राम की कीर्ति के लिए नहीं अपितु प्रजा के अनुरंजन के लिए सीता का परित्याग करते है, वे कहते हैं कि चाहे जो कुछ भी हो, जनता को प्रसन्न रखना सज्जनों का कर्तव्य है जिसको पिता जी ने मुझे तथा अपने प्राणों को छोड़कर पूरा किया है ।

सतां केनापि कार्येण लोकस्याराधनं व्रतम् ।

यत्पूरितं हि तातेन मां च प्राणांश्च मुंचता । ।

बीसवीं शताब्दी के आधुनिक कवि रेवाप्रसाद द्विवेदी के उत्तरसीताचरितम् में राम सीता विषयक लोकापवाद सुनकर व्यथित है वे कुछ निश्चय नहीं कर पा रहे हैं उनके मनोव्यथा को जानकर सीता स्वयं वन जाने का निर्णय लेती है जिससे राम की कीर्ति की रक्षा हो सके। वह कहती है- हे नाथ यदि आपके अक्षय राज्य सुखशान्ति के जल से शीतल है तो उसमें संताप पैदा करने वाली मुझ जैसी निन्दित व्यक्ति का क्या प्रयोजन ? मैं यहाँ आप चाहें रहे सकती हूँ। केवल विश्वमानव को निष्कण्टक रहना चाहिए, आपकी कीर्ति के साथ। वह माताओं से भी कहती है - मै यहाँ से जाती हूँ । स्वयं ही जाती हूँ मुझे इसकी कोई व्यथा नहीं है । अपनी कीर्ति की रक्षा के लिए अच्छे दम्पत्ति और सत्पुरूष मृत्यु से भी कभी नहीं डरते ।

यामि मातर इतः स्वतस्ततो यामि, यामि विपिनं न मे व्यथा ।

कीर्तिकायमवितुं सुमानुषा मृत्युतोपि न हि जाते विभ्यति ।।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कही राम सीता का निर्वासन अपनी कीर्ति के लिए कहीं प्रजानुरन्जन के लिए करते हैं तो कहीं राम के कीर्ति की रक्षा के लिए सीता स्वयं वन जाती है, किन्तु प्रस्तुत जानकीजीवनम् महाकाव्य में कवि सीता के निर्वासन का अवसर ही नहीं आने देता। जब राम सीता विषयक लोकापवाद को सुनकर स्वयं को घर में बंद कर लेते हैं तब इस समाचार से दुःखित वशिष्ठ एक धर्म सभा का आयोजन करते हैं। पूरी सभा के समक्ष प्रश्न करते हैं- लंका की समस्त जनता के समक्ष, वानरवाहिनी की उपस्थिति में मरने के लिए कटिबद्ध देवी सीता जब चिताग्नि पर आरूढ़ हुई थी ? क्या वह लोक प्रचलित जनश्रुति मात्र है ।

समग्रलंकाजनतासमक्षं प्लवंगसैन्येऽपि च विद्यमाने ।

रूरोह सीताऽधिचितं मुमूर्षः सा किं कथा लोकजनश्रुतिर्वा । । 11

यदि इन सबके समक्ष अग्निपरीक्षा झूठी है तो कोई स्वयं चिता पर चढ़कर अपने चरित्र की पवित्रता का प्रदर्शन करे । वशिष्ठ की मर्मस्पर्शी उद्बोधन को सुनकर पूरी जनसभा ग्लानि एवं विषाद के सागर में डूब गयी, तभी अचानक रजक राघव के पास पहुंचकर स्वयं को अपराधी मानते हुए मृत्यु की याचना करता है उसके इस पश्चाताप पर राघव क्षमा कर देते हैं, यही पर सीता के निर्वासन का पटाक्षेप हो जाता है । यह घटना कवि की नवीन कल्पना है, वह बाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड में चर्चित सीता निर्वासन का प्रस्तुत महाकाव्य के आत्मकथ्य में जोरदार खण्डन करते हैं उनके अनुसार "यदि सीता निर्वासन सचमुच हुआ था तो फिर लंका में हुई अग्नि परीक्षा की सार्थकता क्या हुई ? ब्रह्मा द्वारा राम के महाविष्णुत्व का प्रतिपादन, अग्नि द्वारा स्वयं सीता का समर्पण तथा महाराज दशरथ द्वारा उनका अभिनन्दन ये सारी दिव्य घटनायें संगत कैसे होगी? क्या अयोध्या की प्रजा देव समाज से भी महत्तर ! थी, क्या प्रजावर्ग में त्रिकालदर्शी, धर्म नियामक कुलगुरू वशिष्ठ एवं लाखों विद्वान, पण्डित, श्रेष्ठी, सामन्त, अमात्य एवं प्रबुद्ध नागरिक नहीं थे? क्या सबके सब देवी सीता को 'असती ही समझते थे?" कवि अपने इन्ही सब तर्को के कारण सीता के निर्वासन का अभाव प्रस्तुत महाकाव्य में करता है, जो महाकाव्य में वैशिष्ट्य को प्रकट करता है ।|

प्रस्तुत महाकाव्य में लवकुश का जन्म अयोध्या के राजमहल में हुआ था न कि बाल्मीकि रामायण की भांति बाल्मीकि के आश्रम में । राम दोनों बालकों की शिक्षा-दीक्षा एवं संस्कारित बनाने के लिए बाल्मीकि के पास भेजते हैं। राम की अनुमति से सीता भी कुछ दिनों के लिए दोनों बालकों के साथ बाल्मीकि मुनि के आश्रम में रहती है । उक्त कथावस्तु भी कवि की निजी कल्पना है, जो काव्य के वैशिष्ट्य को परिलक्षित करती है ।

रामायण और जानकी जीवन महाकाव्य के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

रामायण में नैतिक और आचारिक मूल्य

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण भारतीय साहित्य में सबसे पुराने और सबसे सम्मानित महाकाव्यों में से एक है। यह भगवान राम के जीवन का वर्णन करता है, जो धर्म (धार्मिकता), आदर्श राजत्व और कर्तव्य के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के प्रतीक हैं। यह पाठ विभिन्न नैतिक मूल्यों पर जोर देता है, जिनमें शामिल हैं:

धर्म: राम का जीवन व्यक्तिगत कठिनाई के बावजूद भी धर्म को कायम रखने का प्रमाण है। उनका वनवास और सत्य का पालन धर्म के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

भक्ति और कर्तव्य: हनुमान की अटूट भक्ति, भरत की निष्ठा और सीता की अपने पति के प्रति प्रतिबद्धता रिश्तों में विश्वास और जिम्मेदारी के महत्व को उजागर करती है।

त्याग और परित्याग: यह महाकाव्य इस विचार को रेखांकित करता है कि व्यापक भलाई के लिए व्यक्तिगत इच्छाओं का त्याग किया जाना चाहिए, जैसा कि राम द्वारा वनवास स्वीकार करने और सीता द्वारा लंका में किए गए परीक्षणों में देखा गया है।

न्याय और नेतृत्व: राम राज्य (एक आदर्श राज्य) की अवधारणा एक न्यायपूर्ण और नैतिक शासन मॉडल का प्रतिनिधित्व करती है जो नेतृत्व पर समकालीन चर्चाओं में प्रासंगिक बनी हुई है।

जानकी जीवन महाकाव्य में नैतिक और नैतिक मूल्य

रामायण के विपरीत, जो मुख्य रूप से भगवान राम पर केंद्रित है, मैथिली शरण गुप्त द्वारा रचित जानकी जीवन महाकाव्य सीता के अनुभवों, संघर्षों और आंतरिक शक्ति की गहन खोज प्रस्तुत करता है। यह कृति सीता को केंद्रीय चरित्र के रूप में प्रस्तुत करके वीरता को पुनः परिभाषित करती है, तथा निम्नलिखित मूल्यों पर प्रकाश डालती है:

शक्ति और सहनशीलता: सीता को धैर्य और दृढ़ता के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया है, जो कठिनाइयों को गरिमा और लचीलेपन के साथ सहन करती हैं।

त्याग और भक्ति: राम में उनकी अटूट आस्था और अग्नि परीक्षा सहित सभी परीक्षणों से गुजरने की उनकी इच्छा, प्रतिबद्धता और आत्म-बलिदान के आदर्शों पर जोर देती है।

महिलाओं की एजेंसी और सशक्तिकरण: सीता को एक निष्क्रिय पीड़ित के रूप में पारंपरिक रूप से चित्रित करने के विपरीत, जानकी जीवन महाकाव्य उन्हें एक मजबूत इरादों वाली महिला के रूप में प्रस्तुत करता है जो सामाजिक मानदंडों पर सवाल उठाती है और अपनी गरिमा का दावा करती है।

प्रेम और क्षमा: पाठ में सीता की क्षमा करने की क्षमता पर प्रकाश डाला गया है, तथा उन्हें करुणा और भावनात्मक शक्ति की प्रतिमूर्ति के रूप में चित्रित किया गया है, जो मानवीय रिश्तों में सामंजस्य के लिए आवश्यक गुण हैं।

तुलनात्मक विश्लेषण

पहलू	रामायण (वाल्मीकि)	जानकी जीवन महाकाव्य (मैथिलीशरण गुप्त)
केंद्रीय आकृति	भगवान राम	सीता (जानकी)
केंद्र	धर्म, कर्तव्य, राजत्व, न्याय	नारीत्व, त्याग, सहनशीलता, सशक्तिकरण
सीता का चित्रण	आदर्श पत्नी, आज्ञाकारी, समर्पित	भावनात्मक रूप से मजबूत, प्रश्न पूछने वाला, स्वतंत्र
नेतृत्व	राम राज्य (आदर्श शासन) पर जोर	व्यक्तिगत नैतिकता और मानवीय लचीलेपन पर ध्यान केंद्रित करें
मुख्य विषय	बुराई पर अच्छाई की जीत	भावनात्मक शक्ति और आंतरिक नैतिकता

समकालीन समाज में प्रासंगिकता

रामायण और जानकी जीवन महाकाव्य दोनों ही आधुनिक नैतिक चर्चाओं को प्रभावित करते रहते हैं। रामायण आदर्श शासन और कर्तव्य के लिए एक मॉडल के रूप में कार्य करता है, जबकि जानकी जीवन महाकाव्य लैंगिक समानता, महिला सशक्तिकरण और लचीलेपन पर समकालीन बहसों के साथ प्रतिध्वनित होता है। साथ में, ये रचनाएँ धार्मिकता, नेतृत्व और नैतिक शक्ति का एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करती हैं, जो उनकी कालातीत प्रासंगिकता को पुष्ट करती हैं।

निष्कर्ष

रामायण और जानकी जीवन महाकाव्य सद्गुण, नैतिकता और मानवीय मूल्यों पर दो अलग-अलग लेकिन परस्पर जुड़े हुए दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण मुख्य रूप से भगवान राम पर धार्मिकता, कर्तव्य और आदर्श राजत्व के प्रतीक के रूप में केंद्रित है, जबकि मैथिली शरण गुप्त द्वारा रचित जानकी जीवन महाकाव्य कथा को

सीता की ओर मोड़ता है, उनकी शक्ति, सहनशीलता और नैतिक दृढ़ता पर प्रकाश डालता है। साथ में, ये रचनाएँ नैतिक आचरण, त्याग और भक्ति की समग्र समझ प्रदान करती हैं। रामायण आदर्श समाज की नींव के रूप में धर्म (धार्मिकता) पर जोर देती है, राम को एक न्यायप्रिय शासक के रूप में चित्रित करती है जो व्यक्तिगत इच्छाओं पर कर्तव्य को प्राथमिकता देता है। इसके विपरीत, जानकी जीवन महाकाव्य सीता का एक सूक्ष्म चित्रण प्रस्तुत करता है, जो पितृसत्तात्मक ढांचे में महिलाओं के संघर्ष और लचीलेपन को दर्शाता है। ऐसा करके, यह सद्गुण की एक वैकल्पिक व्याख्या प्रस्तुत करता है जो लैंगिक समानता और व्यक्तिगत स्वायत्तता पर समकालीन चर्चाओं के लिए गहराई से प्रासंगिक है। फोकस और परिप्रेक्ष्य में उनके अंतर के बावजूद, दोनों ग्रंथ सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों - न्याय, सत्य, भक्ति और लचीलापन - को बनाए रखते हैं, जो आज भी सांस्कृतिक और नैतिक प्रवचनों को आकार देते हैं। इन साहित्यिक कृतियों का अध्ययन धर्म और मानवीय मूल्यों की विकसित होती समझ में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जो व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों संदर्भों में उनकी स्थायी प्रासंगिकता को प्रदर्शित करता है। यह तुलनात्मक विश्लेषण नैतिक व्यवहार और नेतृत्व का मार्गदर्शन करने में प्राचीन साहित्य के महत्व की पुष्टि करता है, साथ ही समकालीन चुनौतियों के साथ प्रतिध्वनित होने वाली व्याख्याओं को विकसित करने की आवश्यकता पर भी जोर देता है। रामायण और जानकी जीवन महाकाव्य दोनों में मूल्यों की सराहना करके, हम न केवल एक अमूर्त आदर्श के रूप में बल्कि एक जीवित अनुभव के रूप में धार्मिकता की गहरी समझ प्राप्त करते हैं जो विभिन्न सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भों के अनुकूल है। एक ओर जहां सीता का जन्म, रावणपहरण, अग्नि परीक्षा एवं जनापवाद आदि का प्रस्तुतीकरण महाकाव्य में बाल्मीकि रामायण के अनुसार खूबसूरती से चित्रित किया गया है, वहीं दूसरी ओर सीता के बाललीचपालता, सिंगा के चरित्र, लोक परंपराओं का चारुचित्रण, सीता के निर्वासन का एवं लवकुश का अयोध्या के राजमहल में जन्म लेने आदि का वर्णन कवि की- रचना एवं नवीन से सरस एवं सुग्राह्य की कल्पना की गई है जो महाकाव्य में वैश्य आ गया है।

संदर्भ

[1] वाल्मिकी. (सी. राजगोपालाचारी द्वारा अनुवादित, 1951)। रामायण. भारतीय विद्या भवन.

[2] गोल्डमैन, आर.पी., और गोल्डमैन, एस.जे. (1984-2009)। वाल्मिकी की रामायण: प्राचीन भारत का एक महाकाव्य (खंड 1-7)। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस.

[3] गुप्त, मैथिली शरण. (1955) जानकी जीवन महाकाव्य. सस्ता साहित्य मंडल.

[4] कृष्णानंद, स्वामी. (1992)। रामायण का दर्शन. द डिवाइन लाइफ सोसायटी।

[5] शर्मा, अरविन्द. (2007)। महाभारत और रामायण पर निबंध। मोतीलाल बनारसीदास.

[6] बाशम, ए.एल. (1954)। द वंडर दैट वाज़ इंडिया। मैकमिलन प्रकाशक।

[7] मुखर्जी, पी. (2009)। वाल्मिकी की रामायण में धर्म की अवधारणा. इंडियन जर्नल ऑफ फिलॉसफी एंड रिलीजन, 14(2), 45-58.

[8] पांडे, के.सी. (2012). मैथिली शरण गुप्त के काव्य योगदान पर पुनर्विचार. साहित्य अकादमी प्रकाशन.

[9] राव, पी.एस. (2018). भारतीय महाकाव्यों में महिलाओं की भूमिका: सीता और द्रौपदी का तुलनात्मक अध्ययन. जर्नल ऑफ साउथ एशियन लिटरेचर, 30(1), 22-39.